हस्त पुस्तिका सं. ६
१९९६

भाकृअनुप
ICAR

निष्पत्तिपर एक झलक

गोवा में स्थित भा. कृ. अ. नु. प. का अनुसंधान समूह

एला, ओल्ड-गोवा ४०३ ४०२.

(गोवा)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अप्रैल, १९७६ में गोवा में कृषि अनुसंधान परिषद का संकुल स्थापित किया/ विभिन्न सरकारी फार्मों में कार्यकरने के पश्चात अंतमें इसे एला, ओल्ड गोवा मे स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ यह अभी भी स्थित है/ यह अनुसंधान संकुल पहले केन्द्रीय रोपण सस्य अनुसंधान संस्थान ,कासरगोड के प्रशासतिक नियंत्रण के अधीन था और अप्रैल १९८९ में इसे पूर्ण विकसित संस्थान बना दिया गया/ यह संस्थान प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा कृषि क्षेत्रों की गतिविधियों के प्रसार और पशु विज्ञान तथा मत्स्य उदयोग जैसी महत्व पूर्ण इकाइयों को कार्यान्वित करने मे अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है/ सन् १९८३ के दौरान इस संस्थान में फार्म प्रौद्योगिकी के अंतरपा को गहन बनाने एवं मूलस्तर पर आधार भूत व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के अद्देश से एक कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना की गयी /

अधिदेश

१. गोवा की सस्य जलवायु की परिस्थितियों के अनुरूप संभावी कृषि उद्यानिय फसलों की उत्पादकता तथा फसलोत्तर व्यवस्था में सुधार लाने के दृष्टिकोन से उनका संरचनात्मक एवं व्यवहारिक अनुसंधान करना /

२. विकसित प्रौद्योगिकी में लाये गये सुधार का प्रसार करना ·

३. अद्यतन प्रौद्योगिकी के प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में कार्य करना /

४. नई प्रौद्योगिकियों को विकसित एवं अंतरित करने के निमित्त राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय संस्थानों एवं अभिकरयों का सहयोग करना·

५. न्यूक्लीयस प्लानिंग सामग्री का उत्पादन करना /

६. परामर्शदात्री सेवा उपलब्ध करना /

७. पश्चिमी घाट की परिस्थितिकी प्रणाली के सूचना संग्रहालय के रूप में कार्य करना·

उपलब्धियों की एक झलक

प्रचलित / संस्तुत की गयी सस्य, किस्में एवं जातियाँ

क) सस्य विज्ञान :-

१ - धान - पूसा - २०५, सरजू - ५२, सी ओ ४४ तथा विक्रम आर्य जैसी मध्यम अवधि वाली किस्में जया के बदले में अभिनिर्धारित एवं संस्तुत ·

धान की लघु अवधि वाली किस्म आन्नदा (गोवा- १) संस्तुत की गयी और मोराड भूमि में इसकी फसल लहलहायी तथा एक अन्य और किस्म विकास निर्धारित की गयी /

पूसा बासमती - १ , इन्द्रयानि तथा पवन जैसी छोटे दाणे एवं सुगंधित (सुवासित) चावल की किस्में अभिनिर्धारित की गयी /

सी एस आर - ४ तथा सी एस आर - १० उच्च उपजवाली तथा लवण सहनशील किस्में खजान भूमि के लिए संस्तुत की गयी /

२. गन्ना - उच्च पैदावार एवं थोडी देरी से तैयार होनेवाली किस्म (प्रजाति) सी ओ - ७५२७ को प्रचलित एवं संस्तुत किया गया/ दूसरी अन्य अल्प अवधि वाली प्रजाति - सी ओ, ८५०१६ भी प्रचलित की गयी /

- उच्च पैदावर एवं थोडी देरी से तैयार होने वाली गन्ने की किस्में सी ओ ९०००६ एवं सी ओ ९०००७ अभिनिर्धारित की गयी /

३. मूँगफली - कमअवधि , उच्च पैदावर तथा सूखा सहनशील किस्में डी. एच ३० एवं डी. एच - ४० अभिनिर्धारित एवं एवं संस्तुत की गयी जो विख्यात हो रही है/

४. चवली - होनहार एवं सुधारी गयी चवली की किस्में - डी.पी एल सी - २१० एवं वी - ११८ अभिनिर्धारित की गयी/

५. कृषि कृषि - सस्य अवशिष्टों को के चुए के इसीमिया फोटाइडा जातियों के माध्यम से उपयोगी बनने जैसे कार्य का आननीकरण एवं उसे विख्यात बनाया गया /

(ख) उदयान कृषि (बागवानी)

नारियल - होनहार एवं संकर किस्मवाले पौधे (डी x टी) प्रचलित किये गये और इनकी किस्मों का भूमिखण्ड तैयार किया गया/:

सुपारी - मंगला किस्म के प्रदर्शन हेतु भूमिखण्ड निर्धारित किया गया/ उच्च पैदावारवाली किस्म सिरसी सेलेक्सन - १ प्रचलित की गयी /

..३

काजू	-	प्रचलित नई किस्म बल्ली २ जैसे स्थानीय वर्ग के पादपों का निर्धारण किया गया और ६ उच्चतम प्रकार की प्रजातियों का एक संग्रह बनाया गया /
आम	-	इसकी संकर प्रजातियाँ प्रचलित की गयी तथा स्थानीय वर्ग के वृक्षों का अभिनिर्धारण किया गया / ६७ किस्मों वाले वृक्षों के एक भूमि खण्ड की स्थापना की गयी / स्थानीय मानकुराड सेलेक्सन (कारदोजो मानकुराड) को अभिनिर्धारीत किया गया और इसका एक संकरीय संग्रहालय बनाया गया /
पपीता	-	पपीते की संभावी किस्मेकुर्गहनी, सोलो एवं भाइलैड प्रचलित की गयी /
अनन्नस	-	उच्च पैदागरवाली जाउएण्ट किव एव मौराटियस जैसी प्रजातियाँ प्रचलित की गयी/
अमरूद	-	इलाहाबादी सफेदा, एक उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली अमरूद की प्रजाति प्रचलित की गयी /
आयल-पाम	-	तिनेरा किस्म का आयलपाम प्रचलित किया गया और इसके प्रदर्शन के लिए एक भूमि खण्ड स्थापित किया गया /
सब्जियाँ	-	भिंडी की होनहार किस्में आर्का, अनामिका, परभनी क्रांति प्रचलित की गयी / स्थानीय बैंगन की अगसाइम प्रजाति को प्रसिध्द किया गया /
कन्दसस्य	-	उच्च पैदावार वाले शकरकंद की किस्से (क्रास - ४ आर॰एस॰ - ५, ७६,(ओ॰पी) २१९ तथा एवं टैपियोका - एच - १२३, एच लागू किया गया /
काली मिर्च	-	उच्च पैदावारवाली पन्नियूर - १ एवं करिमुदा किस्मे प्रचलित एवं संस्तुत की गयी /

पुष्प एवं शोभाकारी पौधे - गुलाब की कई विदेशी किस्मे तथा बॉगेन बिलीया एवं गुडहल क्रेटन तथा अन्य शोभाकरी पौधे की विभिन्न किस्में प्रचलित की गयी /

इत्रक (कुकुरमुत्ता) - प्ल्यूरोटस फ्लोरिडा तथा सोजोरकाजू की किस्में प्रचलित कि गयी और इसके संबर्धन एवं कवक उत्पादन हेतू प्रतिधियों का मसली करण किया गया /

पशु विज्ञान

१० सूअर - इनके संकरण के लिए इसकी दो विदेशी नस्लें प्रचलित की गयी /

२० खरगोश - इनकी मॉस वाली विदेशी नस्ले अर्थात सौतियत चिनचिला, भूरा जाइएण्ट, सफेद जाइएण्ट, न्यूजीलैंड व्हाइट प्रचलित की गयी /

३० कुक्कुटपालन - प्रचुरमात्रा में अंडे के उत्पादन हेतु अंडा देनेवाली प्रजाति एच एच - २६० , बैकयार्ड कुक्कुटपालन के लिए आस्ट्रेा व्हाइट क्रॉस एवं ब्रायलर उत्पादन के लिए आई बी बी ८३ नस्ले प्रचलित की गयी /

४० बत्तख - मॉसवाली व्हाइट पेकिन तथा अंडेवाली खाकी कैम्पबेल नस्ले प्रचलित की गयी/

५० बटेर - बड़े चाव से खायी जानेवाली मांसयुक्त जापानी बटर की प्रजाति प्रचलित की गयी/

६० मछली - मीठेजल मे मत्स्यपालन केलिए कतला, रोहू तथा भाकुर जैसी बड़ी मछलियों एव अन्य-सामान्यमछलियो की प्रजातियाँ प्रचलित की गयी /

७० गहरेपानी वाला चावल - चावल एव मत्स्य के समन्वय के लिए उपयुक्त वाइट्टला - १ अभिनिर्धारित किया गया/

८० चारा - उच्च पैदावार वाले चारे की किस्मे - एन वी - २१ तथा वी - एच - १८ - प्रचलित की गयी /

(क) सस्य विज्ञान

१. चावल के पश्चात रबी की फसल उगाने के लिए मूँगफली एवं चवली की फसले अभिनिर्धारित की गयी /

२. धान की फसल से सबंधित कीट व्यवस्था का मानकीकरण किया गया/

३. धान एव गन्ने के लिए उर्वरक की मात्रा निर्धारित की गयी /

४. मूँगफली की उत्पादन प्रौद्योगिकी का मानकीकरण किया गया/

५. शंकर कद के कीड़े हेतु प्रभावी प्रबंध प्रौद्योगिकी अभिनिर्धारित की गयी /

६. अकार्बनिक (जैव) कृषि प्रणाली विख्यात की गयी /

(ख) उदयान कृषि

१. केला, अनन्नास , पपीता जैसी फलसस्य, अदरक, हल्दी, दालचीनी एवं काली मिर्च जैसे मसाले तथा बेगन एवं भिंडी जैसी सब्जी वाली फसलों के साथ नारियल पर आधारित सस्य प्रणाली की शुरुआत की गयी /

२. अनुपयोगी काजू के वृक्षों के पुन र्वयन हेतु उत्कृष्ट प्रतिधि का मानकी करण किया गया एव उसे विख्यात बनाया गया /

३. आम मे नियमित रूप से फल लगने के लिए कुलटार के प्रयोग को प्रसिध्द किया गया /

(ग) पशुविज्ञान

१. शशको मे एगाल्टिका की समस्याएँ दूर करने के लिए तथा शावकों की मृत्युदर कम करने के लिए उनके आवास का मानकी करण किया गया /

२. सस्य अवशिष्टों के जैविक पतन की तकनीक तथा इत्रक के बीजाणु का पशुधन के रूप में प्रयोग लाने हेतु मानकीकरण किया गया /

३. शशक के शुक्राणुओ का संचयत करने के लिए कृत्रिम योनि अभिकाल्पत की गयी /

४. प्रति यूनिट टायम की दर से अधिकतम शावकों को पैदा करने के दृष्टिकोण से गहन प्रजनन प्रणाली निर्धारित की गयी /

...६

५. गोली वाले चारे के लक्षमात्रा उत्पादन के लिए गोली बनानेवाली मशीन का निर्माण किया गया / मछली तथा झींगे के लिए २.५ मि. मी. व्यास की गोली मशीन का निर्माण किया गया /

६. सूअरो एव पशुओं के लिए स्थानीय उत्पादनों से कम खर्चीली राशन प्रणाली का सूत्रपात्र किया गया /

७. गायों की असंसेचनता की प्रकृति तथा लक्षण का निर्धारण किया गया /

८. फार्म के पशुओं की पोषण समस्याएँ अभिनिर्धारित की गयी /

९. चारे के संरक्षण एवं उसकी पाँष्टकता मे प्रचुरता लाने वाली तकनीक का मानकी करण किया गया /

१०. कुक्कुट बीमारियों के उपचार हेतु, सस्ती होमियोपैथी एवं आयुर्वेदिक दवाओं का निर्धारण किया गया /

११. मछली पालन की मिश्र पध्दति लागू की गयी /

१२. एकीकृत मत्स्य पशुधन एवं चावल मछली कृषि की प्रणाली प्रचालित की गयी /

१३. देशी एवं विदेशी नस्लो वाली संकरित सूअरो का विकास किया गया /

१४. शूकर उत्पादन की प्रबध प्रणाली का मानकीकरण किया गया /